ايَاتُهَا ٧	١ سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ ٥	رُكُوعُهَا ١

सूरए फ़ातिह़ा मक्किय्या है, इस में सात आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़मत वाला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿١﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿٢﴾ مٰلِكِ يَوْمِ

सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो मालिक सारे जहान वालों का बहुत मेह्रबान रह़मत वाला रोजे़ जज़ा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ

सूरए फ़ातिह़ा के अस्मा : इस सूरह के मुतअ़द्दद नाम हैं : फ़ातिह़ा, फ़ातिह़तुल किताब, उम्मुल कु़रआन, सूरतुल कन्ज़, काफ़िया, वाफ़िया, शाफ़िया, शिफ़ा, सब्अ़ मसानी, नूर, रुक़्या, सूरतुल ह़म्द, सूरतुद्दुआ़, ता'लीमुल मस्अला, सूरतुल मुनाजात, सूरतुत्तफ़्वीज़, सूरतुस्सुआल, उम्मुल किताब, फ़ातिह़तुल कु़रआन, सूरतुस्सलाह। इस सूरह में सात आयतें, सत्ताईस कलिमे, एक सो चालीस ह़र्फ़ हैं, कोई आयत नासिख़ या मन्सूख़ नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह सूरह मक्कए मुकर्रमा या मदीनए मुनव्वरह, या दोनों में नाज़िल हुई। अ़म्र बिन शुरह़्बील से मन्क़ूल है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़दीजा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया : ''मैं एक निदा सुना करता हूं जिस में ''اِقْرَاْ'' कहा जाता है।'' वरक़ा बिन नौफ़ल को ख़बर दी गई, अ़र्ज़ किया : जब येह निदा आए आप ब इत्मीनान सुनें। इस के बा'द ह़ज़रते जिब्रील ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ किया : फ़रमाइये ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ'' । इस से मा'लूम होता है कि नुज़ूल में येह पहली सूरत है मगर दूसरी रिवायात से मा'लूम होता है कि पहले ''सूरए इक़्रअ'' नाज़िल हुई। इस सूरत में ता'लीमन बन्दों की ज़बान में कलाम फ़रमाया गया है। **अह़काम :– मस्अला :** नमाज़ में इस सूरत का पढ़ना वाजिब है इमाम व मुन्फ़रिद के लिये तो ह़क़ीक़तन अपनी ज़बान से और मुक़्तदी के लिये ब क़िराअते हुक्मिया या'नी इमाम की ज़बान से। सह़ीह़ ह़दीस में है : ''قِرَاءَةُ الْاِمَامِ لَهٗ قِرَاءَةٌ'' इमाम का पढ़ना ही मुक़्तदी का पढ़ना है। कु़रआने पाक में मुक़्तदी को ख़ामोश रहने और इमाम की क़िराअत सुनने का हुक्म दिया है : ''اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا'' (जब कु़रआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश हो जाओ)। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है : ''اِذَا قَرَاَ فَاَنْصِتُوْا'' जब इमाम क़िराअत करे तुम ख़ामोश रहो। और बहुत अह़ादीस में येही मज़्मून है। **मस्अला :** नमाज़े जनाज़ा में दुआ़ याद न हो तो सूरए फ़ातिह़ा ब निय्यते दुआ़ पढ़ना जाइज़ है, ब निय्यते क़िराअत जाइज़ नहीं। (عالمگیری) **सूरए फ़ातिह़ा के फ़ज़ाइल :** अह़ादीस में इस सूरह की बहुत सी फ़ज़ीलतें वारिद हैं, हु़ज़ूर ने फ़रमाया : तौरैत व इन्जील व ज़बूर में इस की मिस्ल सूरत न नाज़िल हुई। (ترمذی) एक फ़िरिश्ते ने आस्मान से नाज़िल हो कर हु़ज़ूर पर सलाम अ़र्ज़ किया और दो ऐसे नूरों की बिशारत दी जो हु़ज़ूर से पहले किसी नबी को अ़ता न हुए : एक सूरए फ़ातिह़ा, दूसरे सूरए बक़र की आख़िरी आयतें। (مسلم شریف) ''सूरए फ़ातिह़ा'' हर मरज़ के लिये शिफ़ा है। (دارمی) ''सूरए फ़ातिह़ा'' सो मरतबा पढ़ कर जो दुआ़ मांगे **अल्लाह** तआ़ला क़बूल फ़रमाता है। (دارمی) **इस्तिआ़ज़ा :– मस्अला :** तिलावत से पहले ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ'' पढ़ना सुन्नत है। (خازن) लेकिन शागिर्द उस्ताद से पढ़ता हो तो उस के लिये सुन्नत नहीं। (شامی) **मस्अला :** नमाज़ में इमाम व मुन्फ़रिद के लिये ''सुब्ह़ान'' (सना) से फ़ारिग़ हो कर आहिस्ता ''اَعُوْذُ...الخ'' पढ़ना सुन्नत है। (شامی) **तस्मिया :– मस्अला :** ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ'' कु़रआने पाक की आयत है मगर सूरए फ़ातिह़ा या और किसी सूरह का जुज़ नहीं इसी लिये नमाज़ में जह्र (बुलन्द आवाज़) के साथ न पढ़ी जाए, बुख़ारी व मुस्लिम में मरवी है कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और ह़ज़रते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا नमाज़ ''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ'' से शुरूअ़ फ़रमाते थे। **मस्अला :** तरावीह़ में जो ख़त्म किया जाता है उस में कहीं एक मरतबा ''بِسْمِ اللّٰه'' जह्र के साथ ज़रूर पढ़ी जाए ताकि एक आयत बाक़ी न रह जाए। **मस्अला :** कु़रआने पाक की हर सूरत ''بِسْمِ اللّٰه'' से शुरूअ़ की जाए सिवाए सूरए बराअत के। **मस्अला :** सूरए नम्ल में आयते सज्दा के बा'द जो ''بِسْمِ اللّٰه'' आई है वोह मुस्तक़िल आयत नहीं बल्कि जुज़्वे आयत है बिला ख़िलाफ़ इस आयत के साथ ज़रूर पढ़ी जाएगी ! नमाज़े जहरी में जह्रन, सिर्री में सिर्रन। **मस्अला :** हर मुबाह़ काम ''بِسْمِ اللّٰه'' से शुरूअ़ करना मुस्तह़ब है, ना जाइज़ काम पर ''بِسْمِ اللّٰه'' पढ़ना मम्नूअ़ है। **सूरए फ़ातिह़ा के मज़ामीन :** इस सूरत में **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना, रबूबिय्यत, रह़मत, मालिकिय्यत, इस्तिह़्क़ाक़े इबादत, तौफ़ीक़े ख़ैर, बन्दों की हिदायत, तवज्जोह इलल्लाह, इख़्तिसासे इबादत, इस्तिआ़नत, त़लबे रुश्द, आदाबे दुआ़, सालिह़ीन के ह़ाल से मुवाफ़क़त, गुमराहों से इज्तिनाब व नफ़रत, दुन्या की ज़िन्दगानी का ख़ातिमा, जज़ा और रोज़े जज़ा का मुसर्रह़ व मुफ़स्सल बयान है और जुम्ला मसाइल का इज्मालन। **ह़म्द :– मस्अला :** हर काम की

www.dawateislami.net

الدِّيْنِ ﴿٣﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿٤﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ

का मालिक हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें हम को सीधा

الْمُسْتَقِيْمَ ﴿٥﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ

रास्ता चला रास्ता उन का जिन पर तूने एहसान किया न उन का जिन पर ग़ज़ब

ع ١ ٧ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾

हुवा और न बहके हुओं का

इब्तिदा में तस्मिया की त़रह़ ह़म्दे इलाही बजा लाना चाहिये। **मस्अला :** कभी ह़म्द वाजिब होती है जैसे ख़ुत़्बए जुमुअ़ा में, कभी मुस्तह़ब जैसे ख़ुत़्बए निकाह़ व दुआ़ व हर अम्रे ज़ीशान में और हर खाने पीने के बा'द, कभी सुन्नते मुअक्कदा जैसे छींक आने के बा'द। (طحطاوی) "رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" में तमाम काएनात के ह़ादिस, मुम्किन, मोह़ताज होने और **अल्लाह** तआ़ला के वाजिब, क़दीम, अज़ली, अबदी, ह़य्य, क़य्यूम, क़ादिर, अ़लीम होने की त़रफ़ इशारा है जिन को "رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" मुस्तल्ज़िम है, दो लफ़्ज़ों में इ़ल्मे इलाहिय्यात के अहम मबाह़िस त़ै हो गए। "مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ" मिल्क के ज़ुहूरे ताम का बयान और येह दलील है कि **अल्लाह** के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं क्यूं कि सब उस के मम्लूक हैं और मम्लूक मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं हो सकता। इसी से मा'लूम हुवा कि दुन्या दारुल अ़मल है और इस के लिये एक आख़िर है, जहान के सिल्सिले को अज़ली व क़दीम कहना बात़िल है। इख़्तितामे दुन्या के बा'द एक जज़ा का दिन है, इस से तनासुख़ बात़िल हो गया। "اِيَّاكَ نَعْبُدُ" ज़िक्रे ज़ातो सिफ़ात के बा'द येह फ़रमाना इशारा करता है कि ए'तिक़ाद अ़मल पर मुक़द्दम है और इ़बादत की मक़्बूलिय्यत अ़क़ीदे की सिह़्ह़त पर मौक़ूफ़ है। **मस्अला :** "نَعْبُدُ" के सीग़ए जम्अ़ से अदा ब जमाअ़त भी मुस्तफ़ाद होती है और येह भी कि अ़वाम की इ़बादतें मह़बूबों और मक़्बूलों की इ़बादतों के साथ दरजए क़बूल पाती हैं। **मस्अला :** इस में रद्दे शिर्क भी है कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा इ़बादत किसी के लिये नहीं हो सकती। "وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ" में येह ता'लीम फ़रमाई कि इस्तिआ़नत ख़्वाह ब वासित़ा हो या बे वासित़ा हर त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है ह़क़ीक़ी मुस्तआ़न (मददगार) वोही है, बाक़ी आलात व ख़ुद्दाम व अह़बाब वग़ैरा सब औ़ने इलाही के मज़्हर हैं, बन्दे को चाहिये कि इस पर नज़र रखे और हर चीज़ में दस्ते क़ुदरत को कारकुन देखे। इस से येह समझना कि औलिया व अम्बिया से मदद चाहना शिर्क है अ़क़ीदए बात़िला है क्यूं कि मुक़र्रबाने ह़क़ की इमदाद, इमदादे इलाही है इस्तिआ़नत बिलग़ैर नहीं। अगर इस आयत के वोह मा'ना होते जो वहाबिया ने समझे तो क़ुरआने पाक में "اَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ" (मेरी मदद त़ाक़त से करो) और "اِسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ" (सब्र और नमाज़ से मदद चाहो) क्यूं वारिद होता, और अह़ादीस में अहलुल्लाह से इस्तिआ़नत की ता'लीम क्यूं दी जाती। "اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ" मा'रिफ़ते ज़ातो सिफ़ात के बा'द इ़बादत, इस के बा'द दुआ़ ता'लीम फ़रमाई, इस से येह मस्अला मा'लूम हुवा कि बन्दे को इ़बादत के बा'द मश्ग़ूले दुआ़ होना चाहिये, ह़दीस शरीफ़ में भी नमाज़ के बा'द दुआ़ की ता'लीम फ़रमाई गई है। (الطبرانی فی الکبیر والبیہقی فی السنن) "सिराते़ मुस्तक़ीम" से मुराद इस्लाम या क़ुरआन, या ख़ुल्क़े नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم या ह़ुज़ूर, या ह़ुज़ूर के आल व अस्ह़ाब हैं। इस से साबित होता है कि सिराते़ मुस्तक़ीम त़रीक़े अहले सुन्नत है जो अहले बैत व अस्ह़ाब और सुन्नत व क़ुरआन व सवादे आ'ज़म सब को मानते हैं। "صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ" जुम्लए ऊला की तफ़्सीर है कि सिराते़ मुस्तक़ीम से त़रीक़े मुस्लिमीन मुराद है। इस से बहुत से मसाइल ह़ल होते हैं कि जिन उमूर पर बुज़ुर्गाने दीन का अ़मल रहा हो वोह सिराते़ मुस्तक़ीम में दाख़िल है। "غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ" इस में हिदायत है कि **मस्अला :** त़ालिबे ह़क़ को दुश्मनाने ख़ुदा से इज्तिनाब और उन के राहो रस्म वज़्अ़ व अत़वार से परहेज़ लाज़िम है। तिरमिज़ी की रिवायत है कि مَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ से यहूद, और ضَآلِّيْنَ से नसारा मुराद हैं। **मस्अला :** "ضَاد" और "ظَاء" में मुबाइनते ज़ाती है बा'ज़ सिफ़ात का इश्तिराक इन्हें मुत्तह़िद नहीं कर सकता लिहाज़ा غَيْرِ الْمَغْظُوْب "ब ظا" पढ़ना अगर ब क़स्द हो तो तह़रीफ़े क़ुरआन व कुफ़्र हैं, वरना ना जाइज़। **मस्अला :** जो शख़्स "ضَاد" की जगह "ظا" पढ़े उस की इमामत जाइज़ नहीं। (محیط برہانی) "اٰمِيْن" इस के मा'ना हैं : ऐसा ही कर, या क़बूल फ़रमा। **मस्अला :** येह कलिमए क़ुरआन नहीं। **मस्अला :** सूरए फ़ातिह़ा के ख़त्म पर "आमीन कहना" सुन्नत है नमाज़ के अन्दर भी और नमाज़ के बाहर भी। **मस्अला :** ह़ज़रत इमामे आ'ज़म का मज़्हब येह है कि नमाज़ में "आमीन" इख़्फ़ा के साथ या'नी आहिस्ता कही जाए। तमाम अह़ादीस पर नज़र और तन्क़ीद से येही नतीजा निकलता है कि जह्र की रिवायतों में सिर्फ़ वाइल की रिवायत सह़ीह़ है उस में "مَدَّ بِهَا" का लफ़्ज़ है जिस की दलालत जह्र पर क़त़्ई नहीं, जैसा जह्र का एह़तिमाल है वैसा ही बल्कि इस से क़वी मद्दे हम्ज़ह का एह़तिमाल है, इस लिये येह रिवायत जह्र के लिये ह़ुज्जत नहीं हो सकती। दूसरी रिवायतें जिन में जह्र व रफ़्अ़ के अल्फ़ाज़ हैं उन की इस्नाद में कलाम है, इलावा बरीं वोह रिवायत बिलमा'ना हैं और फ़ह्मे रावी, ह़दीस नहीं लिहाज़ा "आमीन" का आहिस्ता ही पढ़ना सह़ीह़ तर है।

www.dawateislami.net